eISSN 2583-6986

IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)

A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL

Volume 03, Issue 11, November 2024

वर्तमान समय में पर्यावरण शिक्षा की प्रासंगिकता

राजेन्द्र सिंह[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बहराइच (उ.प्र.)

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Nov 2024, Published : 30 November 2024

Abstract

पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जो हमें पर्यावरण का ज्ञान प्रदान करती है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से हम अपने पर्यावरण के साथ सामन्जस्य स्थापित करते हुए परिस्थितिकी असन्तुलन में सुधार लाने तथा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और प्रकृति प्रदूषण के कारणों, उनके दुष्परिणामों से अवगत कराया जाता है और साथ ही उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण की रोकथाम की नवीन विधियां बतायी जाती है। पर्यावरण शिक्षा का ज्ञान मानव जीवन के बहुमुखी विकास का एक प्रबल साधन है। पर्यावरण शिक्षा का लक्ष्य नागरिकों मे पर्यावरणीय जागरूकता, रूचियों आभिवृत्तियों, कौशलों एवं मूल्यों का विकास करना है। साथ ही नागरिको में यह अनुभूति जागृत करना कि मानव पर्यावरण का अंग है। पर्यावरण के बिना मानव का कोई असतित्व नहीं हैं।

ऐसी शिक्षा जो मनुष्य को पर्यावरण के प्रति उचित समझ, संवेदनशीलता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जन जागरण फैलाने का कार्य करे पर्यावरण शिक्षा कहलाती है। मानव एवं पर्यावरण का सम्बन्ध विकास से आबद्ध रहा है और विकास की यह प्रक्रिया अनवरत मानव सम्बन्धों को आज भी जोड़े हुए है। अर्थात पर्यावरण शिक्षा का सीधा सा सम्बन्ध जीवन के विकास तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों से होता है। पर्यावरणीय ज्ञान को पीढी दर पीढ़ी स्थानान्तरित करने का कार्य शिक्षा करती है। पर्यावरण शिक्षा का सम्बन्ध वर्तमान तथा भविष्य से है। पर्यावरण की अनुपस्थिति में जीवन की कल्पना करना असम्भव है। फलस्वरूप आज विश्व में पर्यावरण शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। शिक्षा के उदद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है। आज के भौतिकावदी युग में परिस्थितियां भिन्न होती जा रही है। एक ओर जहां विज्ञान एंव तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में नये–नये अविष्कार हो रहे हैं तो दूसरी ओर मानय परिवेश भी उसी गति से प्रभावित हो रहा है। आने वाली पीढी को पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों का ज्ञान पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से दिया जाना अति आवश्यक है। शिक्षार्थियों को प्रकृति तथा शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरण का ज्ञान मानवीय सुख्क्षा के लिये अति आवश्यक है।

कुंजी शब्द : पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण, पर्यावरण जागरूकता

Introduction

मानव अपनी विकास यात्रा के समय से ही प्रकृति के सानिध्य में रहकर ही अपना एवं परिवार का विकास करता रहा है। इस विकास में उसे सभी तरह की सुख सुविधाएँ प्रकृति से उपहार स्वरूप प्राप्त हुयी हैं। मानव ने इस सुख सुविधाओं में रहकर यह नहीं सोचा कि जिन संसाधनों का वह प्रयोग कर रहा है उनकी भी अपनी क्षमताएं है सीमाएं हैं और दायरे हैं। पृथ्वी पर निवास करने का मतलब मानव यदि यह समझ ले कि उसके द्वारा किये जा रहे कुछ कुकृत्यों से उसका पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। विशाल (सीमाओं से

आवद्ध) प्राकृतिक संसाधनों के भण्डार वाली धरती की झोली खाली होती जा रही है। भविष्य की बात यदि न भी करें परन्तु वर्तमान को देखें तो स्थिति पर्यावरण को लेकर काफी विस्फोटक हो गयी है। और आज की पीढ़ी एक ऐसे खतरनाक खतरे से रूबरू हो रही है कि यदि पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक एवं शिक्षित न किया गया तो हमारा जीवन खतरे में पड़ जायेगा।

पर्यावरण की इस गम्भीर समस्या से सम्पूर्ण विश्व त्रस्त है और वर्तमान में पर्यावरण शिक्षा की जरूरत सभी देश शिद्दत के साथ महसूस कर रहे हैं। पर्यावरण की समस्या चाहे जनसंख्या की वृद्धि से हुयी हो या औद्योगिक क्रांति अथवा नगरीकरण से इसको रोक पाना सरकार एवं आम जनता के हाथ में नहीं रहा है। यहाँ अब एक ही उपाय हमारे समक्ष पर्यावरण को ब्रह्मास्त्र के रूप में शेष बचा है वह यह कि लोगों को किसी तरह से यह एहसास करा दिया जाए कि पर्यावरण की इस समस्या के पीछे उसी का हाथ है और यह नैतिक दायित्व शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता है। पर्यावरण की समस्या के प्रति यही सोच पर्यावरण शिक्षा को जन्म देती है।

पर्यावरण शिक्षा अर्थ एवं परिभाषा– संयुक्त राज्य अमेरिका के अनुसार– पर्यावरण शिक्षा का अर्थ उस शैक्षिक प्रक्रिया से है। जो मानव के प्राकृतिक तथा मानव निर्मित वातावरण से सम्बन्धित है। इसमे जनसंख्या प्रदूषण, संसाधनो का विनियोजन एवं निःशेष संरक्षण यातायात प्रौद्योगिकी के सम्बन्ध तथा सम्पूर्ण मानवीय पर्यावरण के शहरी तथा ग्रामीण नियोजन का सम्बन्ध भी निहीत है। एक अन्य संस्था के अनुसार'' पर्यावरण शिक्षा वह प्रकिया है जिसके अन्तर्गत मानव उसकी संस्कृति तथा उसके जैविक एवं भौतिक परिवेष को समझने के लिये उपयुक्त कौशल एवं अभिवृत्तियों का विकास करने के लिये मूल्यो के अभिज्ञान तथा प्रयत्नो की स्पष्टी करण की प्रक्रिया सम्मिलित है।'' एन०सी०ई०आर०टी० ने भी बालकों में उनके लिये निकट तथा दूरस्थ समय एवं स्थान से सम्बद्ध सम्पूर्ण भैतिक एवं सामाजिक वातावरण के बारे मे चेतना और समझ पैदा करना अनिवार्य शिक्षा का अर्थ कहा है।

पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण का ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ व्यक्ति के अन्दर छिपी क्षमताओं (जिसमें पर्यावरण संरक्षण तथा कुशलता) का विकास तो निहित रहता ही है साथ ही एक निश्चित दृष्टिकोण का निर्माण भी होता है। स्पष्ट है कि पर्यावरण शिक्षा का दायरा विस्तृत होता है इसे परिभाषाओं में बाँधना सम्भव नहीं है परन्तु कुछ संस्थाओं शिक्षाशास्त्रियों एवं पर्यावरणविदों की दृष्टि से इसे समझा जा सकता है राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद उ. प्र. द्वारा प्रकाशित पत्रिका 1980 के अनुसार पर्यावरण शिक्षा का तात्पर्य पर्यावरण के कारकों, उनके परस्पर सम्बन्धों मानव जीवन पर उनके प्रभाव, उन पर नियंत्रण एवं सम्पूर्ण परिवेश को संतुलित रखने में मानव के व्यवहार का अध्ययन है। यूनेस्को के लिए फिनिश नेशनल कमीशन ने अपनी पर्यावरण शिक्षा की सेमिनार रिपोर्ट में निम्न परिभाषा दी है ''पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण सुरक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त का साधन है। नेहरू फाउन्डेशन के अनुसार 'पर्यावरणीय शिक्षा वस्तुतः विश्व समुदाय को पर्यावरण के सम्बन्ध में दी जाने वाली वह शिक्षा है जिससे वे समस्याओं से अवगत होकर उनका हल खोज सकें । एन. एम. भागिया (1980) के अनुसार ''पर्यावरण शिक्षा की संकल्पना इतनी व्यापक है कि शिक्षा के लक्ष्य इसमें स्वतः समाहित हो जाते हैं। इसका आधारभूत सम्बन्ध अभिवृत्तियों व मूल्यों के विकास से है। यह शिक्षा व्यक्ति को पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के प्रति सचेष्ट करती है. ताकि ये अपने कौशलों व उत्तरदायित्वों के भाव के सहारे समस्याएँ सुलझा सके। पर्यावरण शिक्षा, शिक्षा और पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति एक बहु अनुशासनिक उपागम है।'' शिक्षा व्यक्ति को पर्यावरण से अनुकूल करना ही नहीं सिखाती,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

वरन उसे पर्यावरण को अपने अनुकूल बदलने के लिए भी प्रशिक्षित करती है। यह व्यक्ति को पर्यावरण पर नियंत्रण रखने की क्षमता प्रदान करती है। पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति की पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं का ज्ञान तथा मूल्यों के विकास द्वारा जीवन के लिए तैयार करती है।

पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जिसके द्वारा बच्चों, युवकों और प्रौढ़ों को प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, परिस्थितिकी असन्तुलन और प्रकृति प्रदूषण के कारणों और उनके दुष्परिणामों से परिचित कराया जाता है और साथ ही उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और परिस्थितिकी असन्तुलन एवं प्रकृति प्रदूषण की रोकथाम की विधियाँ बताई जाती हैं।

पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप– पर्यावरण एक व्यापक सम्प्रत्यय है। मनुष्य जिस प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में रहता है, वह सब उसका पर्यावरण होता है। परन्तु पर्यावरण शिक्षा केवल उसके प्राकृतिक पर्यावरण तक की जानकारी तक सीमित होती है, यह बात दूसरी है कि इसके अन्तर्गत उसके प्राकृतिक पर्यावरण के उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक पर्यावरणों पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया जाता है। पाँच शताब्दियों में मानव सभ्यता का बहुत तेजी से विकास हुआ है और तद्नुकूल उसकी भौतिक आवश्यकताओं में भी तेजी से वृद्धि हुई। वैज्ञानिक आविष्कारों ने उसको भौतिक आवश्यकताएँ और अधिक बढ़ा दी हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहा है। अब संसार भर में इस बात की चिन्ता उत्पन्न हो गई है कि कहीं ये प्राकृतिक संसाधन समाप्त न हो जाएँ और आगे आने वाली पीढ़ी इनसे वंचित न हो जाए। अतः इसके संरक्षण के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं। दूसरी तरफ औद्योगीकरण के कारण वायु और जल प्रदूषित हो रहे हैं, तेल से चलने वाले वाहनों से वायु प्रदूषित हो रही है और ध्वनि प्रदूषण हो रहा है, बढ़ती हुई जनसंख्या से गन्दगी फैल रही है और उससे भी वायु एवं जल दोनों प्रदूषित हो रहे हैं। परिणाम यह है कि मनुष्यों को जीने के लिए शुद्ध वायु एवं शुद्ध जल उपलब्ध नहीं हैं। अतः प्रदूषण को भी रोकने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयत्नों में एक प्रयत्न पर्यावरण शिक्षा है।

यूनेस्को द्वारा 1976 में आयोजित सेमीनार में इसे निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया गया है–

"पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण सुरक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति करने की एक विधि है। यह विज्ञान अथवा अध्ययन क्षेत्र की कोई पृथक शाखा नहीं है। इसका आयोजन जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा की एक एकीकृत प्रक्रिया के रूप में किया जाना चाहिए।"

भारत में पर्यावरण शिक्षा का विकास– भारतीय तो अति प्राचीन काल से प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति बड़े सचेत रहे हैं। वैदिक ऋचाओं में प्रकृति के गुणों का बखान और उसकी दैवीय रूप में प्रार्थना की गई है। वैदिक काल में वनस्पतियों को ईश्वर की अद्वितीय देन माना जाता था और पेड़–पौधों को काटना जीव हत्या माना जाता था। इतना ही नहीं अपितु नदियों के जल में मल विसर्जन करने का निषेध था और वायु को दूषित करने का निषेध था। नित्य हवनों का विधान वायु, मन और आत्मा को शुद्ध करने के लिए ही किया गया था। परन्तु जैसे–जैसे देश की जनसंख्या बढ़ती गई और भौतिकवादी सभ्यता बढ़ती गई तैसे–तैसे हम प्रकृति की रक्षा के स्थान पर उसका दोहन करने लगे और उसे शुद्ध रखने के स्थान पर उसे प्रदूषित करने लगे।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

इस युग में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और प्रकृति में फैलते प्रदूषण से होने वाली हानियों की तरफ सर्वप्रथम ध्यान यूरोपीय देशों का गया और एक समय ऐसा आया कि यह अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई और इसके समाधान के उपाय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सोचे जाने लगे। इस दिशा में कुछ मुख्य कदम थे–1961 में विश्व वन्य जीवन कोष की स्थापना, 1963 में अन्तर्राष्ट्रीय जैव कार्यक्रम की शुरूआत, 1972 में संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण कार्यक्रम की शुरूआतः 5 जून, 1977 को सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण दिवस का मनाना और पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के उपायों पर विचार करना, 5 जून, 1983 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाना और प्रदूषण नियन्त्रण की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना, 5 जून, 1992 को ब्राजील में पृथ्वी पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन और दिसम्बर, 2009 में कोपेनहेगन में पृथ्वी बचाओं सम्मेलन का आयोजन। इस समय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ (न्छव्) और उसकी शाखा यूनेस्को (न्छम्ैब्व्) इस क्षेत्र में विशेष कार्य कर रही हैं।

हमारे देश में जहाँ तक प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण और प्रकृति को प्रदूषण से बचाने की बात है, इसकी शुरूआत सर्वप्रथम सरकारी स्तर पर हुई और यह कार्य पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय को सौंपा गया। इस दिशा में 1974 में प्रदूषण निवारण तथा नियन्त्रण अधिनियम बनाया गया, 1977 में जल उपकर अधिनियम बनाया गया, 1981 में वायु प्रदूषण निवारण अधिनियम बनाया गया और 1986 में पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम बनाया गया। इस समय हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रदूषण नियन्त्रण से सम्बन्धित अनेक योजनाएँ चल रही हैं जिन्हें केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारें केन्द्रीय तथा प्रान्तीय प्रदूषण नियन्त्रण बोडों के माध्यम से चला रही हैं। इन कार्यक्रमों के संचालन में अनेक संस्थाओं– भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद, भारतीय वन्य जीवन संस्थान, भारतीय वनस्पति संस्थान और भारतीय जन्तु सर्वेक्षण संस्थान आदि का बड़ा सहयोग है। और जहाँ तक स्कूलों में पर्यावरण शिक्षा का प्रश्न है, हमारे देश में इस विषय पर सर्वप्रथम 1981 में भारतीय पर्यावरण संस्थान, नई दिल्ली ने एक पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में पर्यावरण शिक्षा के सम्बन्ध में जो सुझाव दिए गए उनमें मुख्य सुझाव निम्नलिखित हैं– (1) पर्यावरण शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे छात्रों में पर्यावरण के प्रति चेतमा जागृत हो।

(2) पर्यावरण शिक्षा ऐसी हो जिससे मनुष्य यह अनुभव करें कि वे स्वयं प्रकृति का एक अंग हैं।

(3) पर्यावरण शिक्षा ऐसी हो जो नागरिकों को पर्यावरण सम्बन्धी राष्ट्रीय नीति, नियम एवं कानूनों की जानकारी दे।

(4) शिक्षा के विभित्र स्तरों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम बनाए जाएँ, प्राथमिक स्तर पर केवल स्थानीय पर्यावरण का ज्ञान कराया जाए, माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण और मानव के सम्बन्धों को स्पष्ट किया जाए और उच्च स्तर पर पर्यावरण सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान एवं प्रशिक्षण दिया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में पर्यावरणीय शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार किया गया और शिक्षा के हर स्तर प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में उसकी व्यवस्था की घोषणा की गई। इसके लिए स्कूली पाठ्यक्रम के निर्माण का उत्तरदायित्व एन.सी.ई.आर.टी. को और उच्च स्तर के पाठ्यक्रम के निर्माण का उत्तरदायित्व इच्छुक विश्वविद्यालयों को सौंपा गया। एन.सी.ई.आर.टी. ने प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा के लिए पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम तैयार किए और साथ ही तत्सम्बन्धी पाठ्यपुस्तकें और निर्देशन सामग्री तैयार की। कुछ प्रान्तों में 1988–89 के सत्र से ही इसकी शुरूआत की गई। इस समय इसे प्रथम 10 वर्षीय

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की प्रथम 5 वर्षीय (प्राथमिक) पाठ्यचर्या में पर्यावरण अध्ययन के नाम से स्थान दिया गया है और साथ ही प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में भी इसे स्थान दिया गया है। कुछ विश्वविद्यालयों ने पर्यावरण विज्ञान को स्नातक स्तर के एक विषय और परास्नातक के एक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के रूप में शुरू किया है। इन सबके साथ–साथ पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अनुसंधान कार्यों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। जनसाधारण को पर्यावरण शिक्षा जनसंचार के माध्यमों से दी जा रही है। टेलीविजन प्रसारण में पेड़ जब अपनी आत्मकथा कहता है तो पता चलता है कि एक पेड़ हमें कितनी आक्सीजन देता है और हमारे जीवन के लिए कितना आवश्यक है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य– वास्तव में किसी भी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में चेतना का विकास होता है। मनुष्य अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरणीय अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो यही शिक्षा का उददेश्य होता है। वास्तविकता भी है कि यदि किसी भी विषय को रोचक एवं प्रभावशाली बनाना है तो उसमें उद्देश्यों का होना अति आवश्यक होता है। शिक्षण कार्य जब तक अधूरा माना जायेगा जब तक कि उसमें उद्देश्यों का होना सुनिश्चित न हो। अर्थात् दूसरे शब्दों में कहें तो उद्देश्यों की जानकारी के अभाव में शिक्षण कार्य सुचारू रूम में संचालित ही नहीं किया जा सकता है।

पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य है प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को रोकना, परिस्थितिकी सन्तुलन बनाए रखना और प्राकृतिक पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना। इस उद्देश्य को निम्नलिखित रूप में विस्तृत किया जा सकता है–

(1) बच्चों, युवकों और प्रौढ़ों को प्राकृतिक संसाधनों, परिस्थितिकी और प्राकृतिक पर्यावरण का ज्ञान कराना।

(2) उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, परिस्थितिकी असंतुलन और प्राकृतिक पर्यावरण केइप्रदूषित होने के दुष्परिणामों का ज्ञान कराना।

(3) उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, परिस्थितिकी असन्तुलन होने और प्राकृतिक पर्यावरण के प्रदूषित होने के कारणों का ज्ञान कराना।

(4) उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को रोकने, परिस्थितिकी असन्तुलन रोकने और प्राकृतिक पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के उपायों का ज्ञान कराना और उनके अनुपालन की ओर प्रवृत्त करना।

यूनेस्को के अनुसार (1981)–

1. पर्यावरण शिक्षा को औपचारिक शिक्षा के साथ सम्बद्ध किया जाना चाहिए।
2. पर्यावरण शिक्षा को अंतः अनुशासनात्मक प्रकृति प्रदान करना।
3. समग्रता के दृष्टिकोण का विकास, जिसमें इकोलॉजिकल सामाजिक व सांस्कृतिक पक्ष सम्मिलित हों।
4. पर्यावरण शिक्षा को मानव जीवन से सम्बन्धित करना।
5. पर्यावरणीय मूल्यों का निर्धारण करना, जिससे शिक्षा के माध्यम से बालक, बालिकाओं में उनका विकास किया जा सके।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

इसी तरह से यूनाइटेड नेशन्स एनवायरमेण्टल प्रोग्राम (न्छम्च्) के अनुसार पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित निर्धारित किये गये–

1. जागरूकता – पर्यावरण शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य जनसामान्य में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना है। यह कार्य औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा के नियोजन द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए।

2. ज्ञान – पर्यावरण शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य समाज के सभी आयु के तथा लिंग के लोगों को पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञान का प्रचार व प्रसार करना है ताकि लोग पर्यावरण और मानव के सम्बन्ध को समझ सकें और पर्यावरण के संरक्षण की चिन्ता करें।

3. मूल्यांकन – व्यक्तियों एवं सामाजिक समूहों में पर्यावरण के मूल्यांकन की क्षमता का विकास करना।

4. अभिवृत्तियों में परिवर्तन– पर्यावरण शिक्षा द्वारा लोगों में पर्यावरण के प्रति अनुकूल अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का विकास किया जाये। मानव की पर्यावरण के मूलभूत अवयव, जलवायु, वनस्पति व पशु पक्षी जगत के प्रति दोहन व शोषण की प्रवृत्तियों के कारण ही पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ा है अतः पर्यावरण शिक्षा का प्रमुख कार्य पर्यावरण के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन करना।

5. कौशलों का विकास– इसके अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा द्वारा लोगों में उन कौशलों का विकास किया जाना आवश्यक है, जिनके द्वारा ये पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान कर उनको हल करने में सहायक वन सकें।

7. सहभागिता– इसके अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा द्वारा प्रदूषण निवारण के लिए वृक्षारोपण, सफाई कार्यक्रमों के संचालन, शिक्षा के कार्यक्रमों के नियोजन व कार्यान्वयन में समाज के सभी वर्गों के लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करता है।

पर्यावरण शिक्षा के विस्तृत उद्देश्यों के निर्धारण में भारत की प्म्न्च संस्था महती भूमिका अदा कर रही है। इसी संस्था के सहयोग से 13–22 अक्टूबर, 1975 ई. के मध्य में बेलग्रेद्ध में 60 राष्ट्रों के 96 प्रतिनिधियों ने इतिहास में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यगोष्ठी का आयोजन करवाकर इस संगोष्ठी के माध्यम से बेलग्रेड घोषणा–पत्र तैयार किया गया। इस कार्य संगोष्ठी के माध्यम से विशेष रूप से पाँच देशों यूरोप, एशिया, अफ्रीका, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के प्रतिनिधियों ने सभी स्तर के छात्रों से लेकर नवयुवकों तक पर्यावरण एवं पर्यावरण शिक्षा पर विस्तृत विचार विमर्श किया। व्यापक रूप से इस कार्यगोष्ठी (घोषणा पत्र) के निम्न उददेश्य सामने रखे गये (1). पर्यावरण के लिए लक्ष्य। (2) पर्यावरणीय शिक्षा के लिए लक्ष्य। (3). पर्यावरणीय शिक्षा के उद्देश्य।

हमारी प्रकृति की अपनी सीमाएँ एवं दायरे हैं और उस पर निवास करने वाले जीव व निर्जीव तत्व एक दूसरे के सहारे जीवन चक्र चलाते हैं इन्हे जोड़ने का कार्य प्रकृक्ति करती है। प्रकृति के इस चक्राक्क्रम में थोड़ी सी गड़बड़ी भी सारे तन्त्र के संतुलन को गड़बड़ कर देती है। प्रकृति का यह सारा तन्त्र अपने प्रक्रम में चलता रहे अर्थात जियो और जीने दो का सदवाक्य पर्यावरण के प्रत्येक तत्व (मानव, पशु–पक्षी, वनस्पतियाँ) पर लागू हो। इन्हीं बिन्दुओं को जनसामान्य तक ले जाने का कार्य पर्यावरण शिक्षा करती है। अर्थात शिक्षा ही यह समग्र माध्यम है जिससे लोगों में समग्रता की दृष्टि का विकास सम्भव है।

पर्यावरण शिक्षा का महत्त्व एवं आवश्यकता– आज विज्ञान के बढ़ते हुए चरण, औद्योगीकरण और बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण संसार भर में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा है, परिस्थितिकीय असन्तुलन बढ़

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 11, November 2024

रहा है और प्राकृतिक प्रदूषण बढ़ रहा है। इसकी रोकथाम के लिए जहाँ एक ओर सरकारी नियम एवं कानून बनाए जा रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर लोगों को इसके प्रति जागरूक करने के लिए पर्यावरण शिक्षा का सहारा लिया जा रहा है। सच बात यह है कि सारे कार्य सरकारी नियम और कानूनों से सम्भव नहीं, उसके लिए जनजागरण भी जरूरी होता है और इस कार्य में शिक्षा एक अहम् भूमिका निभा सकती है।

आज के सन्दर्भ में पर्यावरण शिक्षा का बड़ा महत्त्व और आवश्यकता है।

1. प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण के लिए हम देख रहे हैं कि मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक सम्पदा का बड़ी तेजी से दोहन कर रहा है और यदि यही दशा रही तो हमारी भावी पीढ़ी के लिए कुछ भी प्राकृतिक सम्पदा शेष नहीं रहेगी, न लकड़ी रहेगी, न पत्थर रहेंगे और न खनिन पदार्थ रहेंगे। मनुष्यों को प्राकृतिक सम्पदा के सीमित प्रयोग की ओर अग्रसर करने और उसे भावी पीढ़ियों के लिए बचाए रखने के लिए पर्यावरण शिक्षा का बड़ा महत्त्व है, उसकी बड़ी आवश्यकता है।

2. परिस्थितिकीय असन्तुलन को रोकने के लिए वर्तमान में संसारभर में पेड़—पौधे काटे जा रहे हैं और जीवजन्तु मारे जा रहे हैं, इससे परिस्थितिकीय असन्तुलन बढ़ रहा है। इसकी रोकथाम के लिए पर्यावरणीय शिक्षा की बहुत आवश्यकता है।

3. प्रकृति प्रदूषण की रोकथाम के लिए आज संसार में वनों के काटने, औद्योगिक संस्थानों को चलाने और बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण गन्दगी फैलने से हमारा प्राकृतिक पर्यावरण जल, वायु, मिट्टी आदि सभी प्रदूषित हो रहे हैं। इस प्रदूषण की रोकथाम के लिए पर्यावरणीय शिक्षा का बड़ा महत्त्व है, उसकी बड़ी आवश्यकता है।

4. बच्चों के उचित पोषण और स्वास्थ्य विकास के लिए मनुष्य को जीने के लिए शुद्ध वायु, शुद्ध जल, सूर्य का प्रकाश और खाद्यान्न की आवश्यकता होती है। प्राकृतिक पर्यावरण की वायु एवं जल को शुद्ध बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें प्रदूषण से बचाए रखा जाए, शुद्ध खाद्यान की आपूर्ति के लिए खाद्यानों को भी प्रदूषण से बचाना आवश्यक है। भारत के सन्दर्भ में जनसंख्या नियन्त्रण भी आवश्यक है। जनसंख्या विस्फोट की स्थिति में शुद्ध जल, वायु एवं खाद्य पदार्थ तथा पर्याप्त मात्रा में खनिज पदार्थ उपलब्ध कराना कठिन है। यह तभी सम्भव है जब बच्चों, युवकों और प्रौढ़ों को प्रदूषण की रोकथाम के उपाय बताए जाएँ और उनके पालन की ओर उन्हें अग्रसर किया जाए।

5. जन कल्याण और आर्थिक प्रणाली की रक्षा के लिए इस भौतिकवादी युग की सबसे बड़ी कुदेन स्वार्थपरता हैय आज अधिकतर मनुष्य केवल अपने स्वार्थ की बात सोचते हैं, जनहित और जन कल्याण की नहीं। और बड़े मजे की बात यह है कि इस स्वार्थ की आँधी में वे अपना भी अहित कर बैठते हैं। वे नहीं सोच पाते कि उनके कारण प्राकृतिक संसाधन कम हो रहे हैं, जिससे आगे चलकर अर्थव्यवस्था ही चरमरा जाएगी। प्रकृति में जो प्रदूषण फैल रहा है उसके कुप्रभाव से उनका स्वास्थ्य भी खराब हो जाएगा। बड़े—बड़े नगरों में वायु और जल प्रदूषण के कारण दमा, तपेदिक और पीलिया आदि रोग कितनी तेजी से बढ़ रहे हैं, यह हम सब जानते हैं। तब कहना न होगा कि जनकल्याण और आर्थिक प्रणाली को लम्बे समय तक बनाए रखने के लिए पर्यावरण शिक्षा बड़ी आवश्यकता है।

निष्कर्ष– विभिन्न मानवीय क्रिया कलापों के फलस्वरुप हमारा सामाजिक परिवेष बदल रहा है लगातार प्रकृति के साथ खिलवाड़ व संसाधनो का अपव्ययीकरण प्रयोगों के कारण पर्यावरण असंतुलन बढ़ रहा है इस असंतुलन को रोकने के लिए पर्यावरण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है छात्र ही भविष्य के कर्णधार है राष्ट्र के नागरिक के रुप में समाज की महत्वपूर्ण इकाई के रुप में युवा ही विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करेंगे। विभिन्न भूमिकाओं के निर्वहन में पर्यावरण के साथ जारी छेड़–छाड़ मे सहयोग करेंगे। अथवा पर्यावरण के महत्व को समझते हुए इसके संरक्षण में अपना सहयोग देंगे अतः प्राथमिक से उच्चस्तर तक के छात्रो को पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाने के लिये पर्यावरण शिक्षा को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है। अतः पर्यावरण शिक्षा एक व्यक्ति तथा समुदाय को सुखद एवं दीर्घायु जीवन बिताने हेतु तैयार करती है। अतः पर्यावरणीय शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का इस प्रकार विकास करना होना चाहिये, जिससे व्यक्ति पर्यावरण एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर उन समस्याओं से अपनी सम्बंद्धता स्थापित करते हुये वर्तमान एवं भावी समस्याओं को समझ सके, एवं उनका समाधान कर सके।

संदर्भ सूची–

1.मिश्रा, डॉ. उषा, पर्यावरण शिक्षा, न्यू कैलाश प्रकाशन इलाहाबाद

2.लाल, रमन बिहारी शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन (मेरठ) उत्तर प्रदेश

3.वर्मा, डॉ एल. एन.(2010) भारत में शिक्षा के सामाजिक आधार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

4. कुरुक्षेत्र, मासिक पत्रिका, अक्टूबर 2011

5. मोहम्मद, नूर भारत का भौतिक पर्यावरण, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली।

6. योजना, मासिक पत्रिका, अगस्त 2011

7. विज्ञान प्रगति, मासिक पत्रिका, जून 2012

8. मौर्य एस०डी० (2006) संसाधन एवं पर्यावरण, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

9. डब्लू सी०वाल्टन (1970) ग्राउण्ड वाटर रिसोर्स इवेल्यूशन, एम०पी० ग्रोय हील, न्यूयार्क,

10. सिंह डॉ० काशीनाथ सिंह, डॉ० जगदीश सिंह (1997) आर्थिक भूगोल के मूल तत्व

11.नेगी, पी० एस० (200) पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।

12.मिश्र, डा० डी०के (2004) जनसंख्या, पर्यारण एवं विकास, ए०पी०एच० पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली।

13. सिंह, रवीन्द्र (2001) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।